National Journal of Advanced Research
www.thestudiesjournal.com
ISSN: 2455-216X
Received: 04-12-2025, Accepted: 15-01-2026, Published: 02-02-2026
Volume 12, Issue 1, 2026, Page No. 6-9

सोमालिया में अलगाववाद की राजनीतिः सोमालिलैंड का एक विशेष अध्ययन

धीरज कुमार
शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश
प्रस्तुत शोध पत्र सोमालिया की आंतरिक राजनीति में उत्पन्न अलगाववादी आंदोलन पृथक सोमालिलैंड की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, राजनीतिक गतिशीलता व अंतर्राष्ट्रीय सहयोग तथा प्रभावों के विश्लेषणात्मक अध्ययन का प्रयास करता है। अलगाववाद की राजनीति, पूर्णतया सीमा विहीन होती है। जो केवल राजनीतिक, भौगोलिक और आर्थिक ही नहीं अपितु सामाजिक और सांस्कृतिक विभाजन को भी जन्म देकर उसका पोषण करती है। पूर्वी अफ्रीकी देश सोमालिया में जारी पृथक सोमालिलैंड की मांग आज विश्व राजनीति के लिए चिंतन का आयाम गढ़ रही है। सोमालिया गृह युद्ध 1991 में शियाद बर्रे शासन के अंत के साथ प्रारंभ यह मांग आज अंतरराष्ट्रीय राजनीति का ज्वलंत विषय बन गई है और इजरायल ने 2025 के अंत में सोमालिलैंड को एक स्वतंत्र और संप्रभु राज्य के रूप में अंतर्राष्ट्रीय मान्यता प्रदान करने के साथ इस प्रश्न को प्रबलता, जटिलता और प्रमुखता प्रदान कर दी है। 30 वर्षों से भी अधिक समय से सोमलिलैंड का दावा है कि वो एक स्वतंत्र राज्य हैं जिसका अपना स्वयं का निश्चित भू भाग, जनसंख्या, सरकार और संप्रभुता है। परन्तु आज भी सोमालिलैंड दुनिया के लिए केवल एक राज्य (सोमालिया) का आंतरिक व विवादित भौगोलिक क्षेत्र मात्र ही है। शोध पत्र यह तर्क प्रस्तुत करता है कि सोमालिलैंड के पृथक राज्य का विवाद क्षेत्रीय अखंडता और आत्मनिर्णय के मध्य मूलभूत विरोधाभास का उदाहरण है।

मूलशब्द: सोमालिया, सोमालिलैंड, अलगाववादी राजनीति, ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, अंतरराष्ट्रीय राजनीतिक मान्यता, क्षेत्रीय अखंडता और आत्मनिर्णय

शोध पत्र का अध्ययन ऐतिहासिक पद्धति एवं पुस्तकालय अनुसंधान प्राविधि से किया गया है। आंकड़ों के संग्रहण हेतु सोमालिया सरकार की आधिकारिक वेबसाइट, सोमालिया में अलगाववादी आंदोलन और सोमालिलैंड की पृथक राज्य की मांग पर आधारित शोध पत्र/पत्रिकाओं, पुस्तकों, दैनिक समाचार पत्रों, समय–समय पर प्रकाशित विभिन्न राष्ट्रीय (सोमालिया) एवं अंतर्राष्ट्रीय एजेंसियों की रिपोर्टों का विशेष तौर पर अध्ययन किया गया है।

अफ्रीका महाद्वीप के सबसे पूर्व में स्थित "पूर्वोत्तर अफ़्रीका का सामरिक उपक्षेत्र" व पूर्वी अफ्रीका की सींग (Horn of Africa) के नाम से विख्यात संघीय गणराज्य सोमालिया जो कि 637, 657 वर्ग किमी. तक विस्तृत है कि सांस्कृतिक और सामाजिक रूप से विश्व के सम्मुख एक अलग और विशेष पहचान है। सोमालिया अफ्रीकी महाद्वीप में सबसे अधिक तटीय रेखा वाला देश है। सोमालिया भौगोलिक रूप से पश्चिम में इथियोपिया, उत्तर पश्चिम में जिबूती, दक्षिण–पश्चिम में केन्या, उत्तर में एडन की खड़ी तथा पूर्व में हिंद महासागर से सीमा साझा करता है। सोमालिया की जनसंख्या लगभग 14 मिलनिया है।1 जिसमें से लगभग 27 लाख नागरिक देश के सबसे बड़े शहर व राष्ट्रीय राजधानी मोगादिशु में निवास करते हैं। सोमालिया को अफ्रीकी महाद्वीप में धार्मिक व जातीय रूप से सर्वाधिक समानता रखने वाले राष्ट्र का भी गौरव प्राप्त है। सोमालिया में लगभग 85% नागरिक सोमाली एथिनिसिटी और सोमाली भाषाभाषी हैं।

अपनी विशेष भौगोलिक पहचान के कारण सोमालिया सदैव ही विशेषकर मध्य युग में अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का एक अति महत्वपूर्ण केंद्र रहा है। 7वीं शताब्दी में अरब के व्यापारियों के द्वारा सोमालिया में इस्लाम का आगमन हुआ और आज 99 प्रतिशत से भी अधिक नागरिक सुन्नी इस्लाम को मानने वाले हैं। 13वीं शताब्दी से 15वीं शताब्दी तक सोमालिया पर अजुरान सल्तनत का शासन रहा। अजुरान साम्राज्य अफ्रीका का एक मात्र जलीय साम्राज्य था। जो कि अपने प्रबंधन, प्रशासन और सैन्य शक्ति के लिए आज भी प्रसिद्ध है। अजुरान सल्तनत के बाद सोमालिया में अदाल सल्तनत का उदय हुआ। अदाल साम्राज्य ने इथियोपियाई ईसाइ साम्राज्य से लंबा युद्ध लड़ा। इसके बाद कई अन्य साम्राज्यों जैसे मोगादिशु, तुनि, और गेलेदी का उदय और फिर धीरे धीरे सोमालिया में साम्राज्यवाद की जड़े हिल गई। साम्राज्यवाद के कमजोर हो जाने के कारण सोमालिया और पूर्वी अफ्रीका विभिन्न छोटे छोटे कबीलों में विभाजित हो गया। और पूर्वी अफ्रीका में कबीलाई शासन की शुरुआत हुई। 19 वीं शताब्दी में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी ने सोमालिया में दस्तक दी। "1840 और 1886 के बीच, ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी ने विभिन्न सोमाली सरदारों के साथ कई व्यापारिक संधियां की।" (जापाता, 2012)2 बीईसी आगमन के बाद सोमालिया में इटली का पदार्पण हुआ और इटली ने सोमालिया में इतावली सोमालिलैंड की स्थापना की। "इटली ने 1897 और 1908 के बीच दक्षिण में इतावली सोमालिलैंड की सीमाएं निर्धारित कीं।" (जापाता, 2012)3 1960 में दोनों को उपनिवेशों से स्वतंत्रता प्राप्त हुई। और सोमाली गणराज्य की स्थापना हुई परन्तु सोमालिया में लोकतांत्रिक शासन ज्यादा नहीं चला बहुत जल्द ही राजनीतिक अस्थिरता के कारण तानाशाही का उदय हो गया। 1969 में जनरल मोहम्मद सियाद बर्रे ने सैन्य तख्ता पलट कर सत्ता अपने हाथों में ले ली और 1991 तक सोमालिया के राष्ट्रपति मोहम्मद शिअद बर्रे ने सैन्य शासक बन के शासन किया। सियाद बर्रे ने सोमालिया में वैज्ञानिक समाजवाद का प्रारंभ किया और रूस के साथ मधुर संबंध स्थापित किए। 1991 में सियाद बर्रे की पकड़ केंद्रीय सत्ता से छूट गई और संपूर्ण सोमालिया अराजकता, अव्यवस्था और अशांति का घर बन गया और यही से अलगाववादियों ने सोमालिया का विभाजन कर सोमालिलैंड के रूप में पृथक राज्य के निर्माण की मांग प्रारंभ कर दी।

सोमालिया के उत्तर पश्चिम में स्थित और 3 दशक से पृथक राज्य के रूप में स्वयं को स्थापित करने में निरंतर प्रयासरत, गैरमान्यता प्राप्त राज्य सोमालिलैंड के उत्तर में एडन की खाड़ी, पश्चिम में जिबूती, दक्षिण में इथियोपिआ और पूर्व में सोमालिया जैसे देश स्थित है। सोमालिलैंड का कुल क्षेत्रफल 176, 119 वर्ग

किमी. है।4 और 800 किमी की तटीयरेखा लाल सागर से मिलती है। सोमालिलैंड अफ्रीकी महाद्वीप में क्षेत्रफल के अनुसार 37 वां सबसे बड़ा देश है अर्थात् अफ्रीका महाद्वीप में 18 ऐसे भी देश हैं जो क्षेत्रफल में सोमालिलैंड से भी छोटे हैं।5 सोमालिलैंड की राजधानी हॉर्गियिसा है। सोमालिलैंड की आधिकारिक भाषा सोमाली है और साथ ही साथ अंग्रेजी तथा अरबी बोली जाती है। और सोमालिलैंड में लगभग 40 लाख लोग निवास करते हैं।

सोमालीलैंड राजनीतिक, सामरिक और रणनीतिक तौर पर अफ्रीका और विश्व व्यापार के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण स्थिति रखता है क्योंकि यह बाब–अल–मंदेब के करीब, एडन की खाड़ी और लाल सागर के प्रवेश द्वारा पर स्थित है। 16 वीं शताब्दी में उस्मानी साम्राज्य द्वारा ज़ैला बंदरगाह अधिग्रहण के साथ न केवल अरबी, फारसी और भारतीय व्यापारियों से शुक्ल और अन्य करों का संग्रह किया गया बल्कि उन्हें आर्थिक और राजनीतिक संरक्षण भी प्रदान किया गया। इस आर्थिक संरक्षण और सम्पन्नता के नवीन आयाम के साथ संबंधित क्षेत्र को विशिष्टता भी प्रदान की गयी। "1870 में प्रति वर्ष 18000 पाउंड स्टर्लिंग का भुगतान करके मिस्र के खदीव इस्लाम प्रथम ने ज़ैला बंदरगाह पर उस्मानी साम्राज्य से अधिकृत एकाधिकार प्राप्त कर लिया।"6 1869 में स्वेज नहर में व्यापार के आवागमन के प्रारंभ हो जाने के बाद मिस्र ने प्रकाशस्तंभ, बंदरगाहों, घाट, किले और बैरकों का निर्माण किया। इसके पश्चात 1877 में ब्रिटिश साम्राज्य ने इस भौगोलिक क्षेत्र पर ध्यान केंद्रित करके कुछ संधियों और समझौतों के साथ वाणिज्यिक दूत नियुक्त किए। 1884, सूडान में बदलते राजनीतिक परिदृश्य के कारण उत्पन्न महदी विद्रोह से मिस्र को आर्थिक और वित्तीय संकट का सामना करना पड़ा जो कि ब्रिटिश साम्राज्य द्वारा निर्धारित थे। इससे सोमालीलैंड में जारी कई मत्वपूर्ण परियोजनाओं को सीमित करना पड़ा। इसी प्रकार ब्रिटिश साम्राज्य ने 1960 तक सोमालीलैंड पर पूर्ण अधिकार से शासन किया। 26 जून 1960 को सोमालीलैंड ब्रिटिश राजमुकुट से स्वतंत्र हुआ।

सोमालिया में प्रत्येक वर्ष 1 जुलाई को स्वतंत्रता दिवस मनाया जाता है क्योंकि 1 जुलाई 1960 को ही सोमालिया को औपनिवेशिक शासन से मुक्ति प्राप्त हुई थी। सोमाली नागरिकों के लिए 1 जुलाई इस लिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि 1 जुलाई को ही सोमालिया के उत्तरीय और दक्षिण दोनों क्षेत्रों को ब्रिटिश साम्राज्य और इतावली औपनिवेशिक शासन से स्वतंत्रता प्राप्त हुई और 1 जुलाई1 960 को औपचारिक रूप से सोमाली गणराज्य की स्थापना हुई।

सोमालिया एक लोकतांत्रिक संघीय गणराज्य है। सोमालिया के संविधान में 15 अध्याय और 143 अनुच्छेद हैं। संविधान के अनुच्छेद 1 के अनुसार "सोमालिया एक संघीय, संप्रभु और लोकतांत्रिक गणराज्य है, जिसकी स्थापना जनता के समावेशी प्रतिनिधित्व, बहुदलीय प्रणाली और सामाजिक न्याय के सिद्धांतों पर आधारित है।"(अस्थायी संविधान, 2012)7 अनुच्छेद 2 राज्य और धर्म के संबंध में प्रावधानों की स्पष्ट व्याख्या करते हुए कहता है कि "राज्य का धर्म इस्लाम है। इस्लाम के अतिरिक्त किसी अन्य धर्म का प्रचार नहीं किया जा सकता। और ऐसी कोई भी विधि अधिनियमित नहीं की जा सकती जो शरिया के सामान्य सिद्धांतों और उद्देश्यों के अनुरूप न हो।"(अस्थायी संविधान, 2012)8 वहीं अनुच्छेद 3 स्थापना के सिद्धांतों की बात करता है। जबकि अनुच्छेद 4 संविधान की सर्वोच्चता को स्पष्ट करता है। अनुच्छेद 7 राज्य और उसके भू भाग या प्रदेश, अनुच्छेद 8 नागरिकता,11 समानता, 12 मौलिक अधिकार, 22 राजनीतिक सहभागिता के अधिकार, 47 निर्वाचन, 48 राज्य की संरचना, 49–52 तक संघ और सरकार की व्याख्या है। जबकि अध्याय 6 संसद के प्रावधानों का वर्णन करता है।

सोमालीलैंड भी स्वयं को एक लोकतांत्रिक गणराज्य बताता है। सोमालीलैंड का संविधान 5 अध्याय और 130 अनुच्छेदों में विभाजित है। जिसके प्रथम अध्याय के प्रथम भाग में सोमालीलैंड राज्य, सोनालीलैंड के भू भाग या प्रदेश, राजधानी, नागरिकता, धर्म, भाषा, राष्ट्रध्वज, राष्ट्रीय प्रतीक और राष्ट्रगान का प्रावधन है। भाग 3 नागरिकों के अधिकार और कर्तव्यों से संबंधित है। अध्याय 2 राज्य की संरचना का वर्णन करता है। जबकि अध्याय 2 का प्रथम भाग विधायिका अर्थात् संसद को परिभाषित करता है। जिसमें प्रतिनिधि सभा और वृद्धजन (The House of Elders) सभा को समाहित किया गया है। अध्याय 3 कार्यपालिका से और अध्याय 4 न्यायपालिका से संबंधित है।

सोमालिलैंड का राजनीतिक और संवैधानिक विकास

2001 में आयोजित जनमत–संग्रह का सोमालिलैंड के राजनीतिक इतिहास में एक निर्णायक क्षण था। इसमें भारी बहुमत ने स्वतंत्रता और नए संविधान के पक्ष में मतदान किया। यह प्रक्रिया अंतरराष्ट्रीय मान्यता के अभाव के बावजूद आंतरिक वैधता और जनसमर्थन का सशक्त प्रमाण बनी। सोमालिलैंड ने एक नियंत्रित बहुदलीय प्रणाली अपनाई, जिससे कबीलाई विखंडन को सीमित किया जा सके। नियमित चुनावों और राजनीतिक प्रतिस्पर्धा ने शासन को अपेक्षाकृत उत्तरदायी बनाया, जो हॉर्न ऑफ अफ्रीका जैसे अस्थिर क्षेत्र में एक उल्लेखनीय उपलब्धि है। सोमालिलैंड में सत्ता का शांतिपूर्ण हस्तांतरण इसकी राजनीतिक परिपक्वता को दर्शाता है। चुनावी विवादों का समाधान संवाद और संस्थागत प्रक्रियाओं के माध्यम से किया गया, जिसने राज्य–निर्माण की विश्वसनीयता को सुदृढ़ किया। संवैधानिक ढाँचे के अंतर्गत शक्तियों का पृथक्करण स्थापित किया गया है। कार्यपालिका शासन संचालन करती है, विधायिका नीति और कानून निर्माण में सक्रिय है, जबकि न्यायपालिका ने संवैधानिक विवादों के समाधान में अपेक्षाकृत स्वतंत्र भूमिका निभाई है। यह संस्थागत संतुलन सोमालिलैंड की स्थिरता का प्रमुख आधार रहा है।

सोमालिया में सोमालीलैंड हेतु अलगाववाद के कारण

जिस प्रकार राज्यों में गृह युद्ध, अलगाववादी राजनीति और राष्ट्र विरोधी शक्तियां स्वयं को मजबूती के साथ स्थापित करने में और संगठित राज्य क्षेत्रों को अपने निजी स्वार्थ के लिए विभाजित करने हेतु राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक आदि समस्त पहलुओं को ढाल के रूप में उपयोग करती हैं वैसे ही सोमालिया में अलगाववाद के उदय का कोई एक विशेष कारण नहीं अपितु अनेक कारण हैं। इनमें राजनीतिक व्यवस्था की विफलता, सामाजिक और कबीलाई तनाव व विद्रोह, वित्तीय संकट और आर्थिक असमानता प्रमुख हैं। सोमालिया में अलगाववाद को समझने के लिए राज्य विघटन, दमनकारी शासन और सामाजिक संरचनाओं की भूमिका को एक साथ देखना आवश्यक है। (लेविस, 2008)9 सोमालीलैंड का अलगाववादी आंदोलन इन्हीं संरचनात्मक संकटों की परिणति के रूप में विकसित हुआ।

सियद बर्रे की दमनकारी नीतियों ने हार्गेइसा को पृथक होने के लिए पूर्णरूप से विवश किया। 1969 से 1991 तक सियद बर्रे के सैन्य शासन ने एकीकृत सोमालिया के लोकतांत्रिक और गणतांत्रिक मूल्यों को तिलांजलि दे दी और संपूर्ण सोमालिया में केंद्रीयकृत सत्ता व्यवस्था को बलपूर्वक लागू करते हुए राजनीतिक बहुलता को समाप्त कर दिया। इसके लिए केन मेनक्याउस लिखते हैं कि 1969 में सत्ता में आए सियद बर्रे के सैन्य शासन ने राजनीतिक बहुलता को समाप्त कर दिया। (मेनक्याउस, 2007)10 जिसने भी बर्रे की दमनकारी नीतियों के खिलाफ बोलने का प्रयास किया उनको प्रत्येक प्रकार से ध्वस्त कर दिया गया। विरोधी समूह, विशेष कर उत्तरीय क्षेत्रों में प्रभावी इसाक कबीले

को राज्य विरोधी घोषित कर दिया गया। 1980 के दशक में हार्गेइसा और बुराओ पर व्यापक और आक्रामक रूप से सैन्य कार्यवाही और बमबारी ने राज्य और समाज के मध्य अविश्वास को प्रबलता प्रदान किया। इस प्रकार राज्य प्रायोजित आतंकवाद, अनावश्यक हिंसा और दमनकारी कार्यवाहियों ने उत्तरी क्षेत्र अर्थात् सोमालीलैंड के नागरिकों में इस धारणा को जन्म दे दिया कि एकीकृत सोमाली गणराज्य उनके राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक आदि सभी के अस्तित्व के लिए संकट है।

तत्कालीन संघीय सरकार और राज्यों के मध्य व्यापक और आवश्यक रूप से तारतम्यता के अभाव के कारण भी सम्पूर्ण सोमालिया में व्यापक रोष देखा जा सकता था। अर्थात् सोमालिया में एक प्रभावशाली और सुदृढ़ संघीय ढांचे का अभाव भी राजनीतिक असंतोष का प्रमुख कारण था। ब्रिटिश और इतावली औपनिवेशिक शासन से स्वतंत्रता के बाद स्थापित संघीय सरकार ने प्रारंभ से ही निर्णय–निर्माण और राज्य के समस्त संसाधनों पर अपना एक–छत्र और प्रभावशाली नियंत्रण स्थापित कर लिया था। इसके लिए सामातर लिखते हैं कि स्वतंत्रता के बाद सोमालिया में सत्ता अत्यधिक केंद्रीकृत रही।(सामातर, 1992)11 इससे घटक प्रदेशों/राज्यों की राजनीतिक भागीदारी व आर्थिक साझेदारी सीमित हो गई थी। विशेषकर उत्तरी क्षेत्र अर्थात सोमालीलैंड के साथ यह व्यवहार जगजाहिर था। परिणाम स्वरूप संघीय सरकार के प्रति उत्तरी क्षेत्र के नागरिकों का अविश्वास प्रभावशाली होता गया और सोमालीलैंड का पृथक राज्य के रूम में स्थापित होना ही उत्तरी सोमालिया के नागरिकों के राजनीतिक समानता और शक्ति प्राप्ति के विकल्प के रूप में शेष बचा था।

सोमाली गणराज्य की स्थापना से पूर्व और ब्रिटिश साम्राज्य और इतावली औपनिवेशिक शासन के समय भी सोमालिया अनेक छोटे–बड़े कबीलों में विभाजित था इसी कारण क़बीलाई व्यवस्था सोमालिया की राजनीति को प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से प्रभावित करती है। सियद बर्रे के सैन्य शासन के समय इसाक कबीले के साथ की गयी बर्बरता और हिंसा तथा अनावश्यक विस्थापन ने इसाक समुदाय में पर्याप्त असंतोष को जन्म दिया और इसाक कबीले के इस असंतोष ने संपूर्ण उत्तरी सोमालिया में भारी जनाक्रोश को प्रोत्साहित किया। यही जनाक्रोश और असंतोष आगे चलकर सोमालीलैंड की नींव का प्रमुख कारण बना। प्रथागत (परंपरागत) प्राधिकारों को समाप्त नहीं किया गया, बल्कि उन्हें उभरती हुई राजनीतिक व्यवस्था में सम्मिलित कर लिया गया।(मेनखाउस, 2007)12 राज्य निर्माण के लिए निश्चित भू–भाग, जनसंख्या, सरकार और संप्रभुता नितांत अवश्य आधार व तत्व हैं। यदि इनमें से कोई एक भी अनुपस्थित हो जाए तो कोई भी राज्य केवल और केवल एक क्षेत्र मात्र या भू– भाग मात्र रह जाएगा। परन्तु राज्य निर्माण के उपर्युक्त तत्वों से भिन्न सामाजिक एकता किसी भी राष्ट्र को चिरायु और सशक्त बनाए रखने के लिए एक अति आवश्यक और महत्वपूर्ण आधार है। और सामाजिक एकता को बनाए रखने के लिए समान पहचान और संस्कृति के आधार पर राजनीतिक समानता और सहभागिता सुनिश्चित की जाती है। यह भी अटल सत्य है कि सामाजिक पहचान राजनीति का केंद्रित तत्व है। सोमालिया का सामाजिक अध्ययन बताता है कि क़बीलाई पहचान सामाजिक एकता और स्थानीय वैधता के स्रोत हैं। पारंपरिक बुजुर्गों की भूमिका ने राजनीतिक स्थिरता में योगदान दिया और यह दिखाया कि स्थानीय सामाजिक संरचनाएं राज्य निर्माण में सहायक हो सकती हैं। गुर्ति (House of Elders) ने संसदीय और सामाजिक संघर्षों के समाधान में वैधता और मध्यस्थता की क्षमता प्रदान की, विशेष रूप से यह प्रणाली औपचारिक राज्य संरचनाओं की कमी को संतुलित करती है। (House of Elders, Somaliland)13 इस पहचान आधारित एकजुटता ने अलगाववादी आंदोलन को सामाजिक सहयोग प्रदान किया।

सोमालिया में आर्थिक संसाधनों का केंद्रीकृत और पक्षपातपूर्ण वितरण क्षेत्रीय असंतोष का एक प्रमुख कारण रहा है। उत्तरी क्षेत्रों को लंबे समय तक विकास योजनाओं और सार्वजनिक निवेश से वंचित रखा गया, जबकि दक्षिणी क्षेत्रों को अपेक्षाकृत अधिक लाभ मिला। इस आर्थिक उपेक्षा ने यह धारणा उत्पन्न की कि एकीकृत राज्य व्यवस्था सोमालिलैंड के आर्थिक हितों की रक्षा करने में असमर्थ है। बुनियादी ढाँचे, शिक्षा, स्वास्थ्य और रोज़गार के अवसरों में क्षेत्रीय विषमता ने अलगाववादी भावनाओं को और प्रबल किया। 1991 के बाद सोमालिलैंड ने सीमित संसाधनों के बावजूद स्वयं के राजस्व तंत्र और विकास प्राथमिकताओं को विकसित किया। तुलनात्मक रूप से सोमालिया के अन्य हिस्सों में जारी अस्थिरता ने इस विश्वास को मजबूत किया कि स्थानीय स्वशासन विकास और स्थिरता का अधिक प्रभावी मार्ग हो सकता है।

अंतरराष्ट्रीय राजनीति और सोमालिलैंड

सोमालिलैंड को अक्सर एक de facto state "वास्तव में अस्तित्वशील राज्य/तथ्यगत राज्य" के रूप में वर्णित किया जाता है, क्योंकि इसमें परिभाषित क्षेत्र, स्थायी जनसंख्या, प्रभावी सरकार और आंतरिक वैधता के तत्व विद्यमान हैं, किंतु अंतरराष्ट्रीय मान्यता का अभाव है। पेग के अनुसार सोमालिलैंड ने अपने नियंत्रण वाले क्षेत्र में प्रशासनिक नियंत्रण, स्थिर शासन, और जनता की सहमति जैसी राज्यत्व की आवश्यक शर्तें पूरी कर रखी हैं, किंतु इसे औपचारिक अंतरराष्ट्रीय मान्यता नहीं मिली है।(पेग, 1998)14 कैस्परसन के अनुसार, अंतरराष्ट्रीय मान्यता का अभाव उस क्षेत्र की आंतरिक संप्रभुता या प्रभावी शासन के तथ्य को समाप्त नहीं करता है, क्योंकि कई अनौपचारिक/अपरिचित राज्योंकृ जैसे सोमालिलैंड ने अपनी वास्तविक राजनीतिक संरचना और नियंत्रण स्थापित किया है। (कैस्परसन, 2012)15 अफ्रीकी संघ का दृष्टिकोण अफ्रीकी संघ ने सोमालिलैंड की स्थिरता को स्वीकार किया है, किंतु औपनिवेशिक सीमाओं की अक्षुण्णता के सिद्धांत के कारण औपचारिक मान्यता से परहेज़ किया है। अफ्रीकी संघ की एक रिपोर्ट के अनुसार, सोमालिलैंड का मामला अफ्रीकी राजनीतिक इतिहास में अद्वितीय और अपने आप में औचित्यपूर्ण है, क्योंकि 1960 के संघ को कभी औपचारिक रूप से अनुमोदित नहीं किया गया था और यह क्षेत्र व्यापक शांति तथा शासन प्रतिबद्धता दिखाता है। (African Union Fact Finding Mission Report 2005)16 यह दृष्टिकोण अफ्रीका में अन्य संभावित अलगाववादी आंदोलनों को रोकने की चिंता से प्रेरित है। क्षेत्रीय भू–राजनीति में इथियोपिया और जिबूती के लिए सोमालिलैंड एक रणनीतिक साझेदार के रूप में उभरा है, विशेषकर बंदरगाह, व्यापार और सुरक्षा सहयोग के संदर्भ में। फिर भी, क्षेत्रीय संतुलन बनाए रखने की आवश्यकता इन देशों को औपचारिक मान्यता देने से रोकती है। वही अगर हम, मान्यता न मिलने के प्रमुख, कारण को देखें तो अंतरराष्ट्रीय समुदाय की प्राथमिकता सोमालिया की क्षेत्रीय अखंडता को बनाए रखना रही है। इसके अतिरिक्त, अंतरराष्ट्रीय कानून में अलगाव की स्पष्ट प्रक्रिया का अभाव और भू–राजनीतिक हितों की जटिलता सोमालिलैंड की मान्यता में बाधक बनी हुई है।

सोमालिया और सोमालिलैंड संबंध

सोमालिया और सोमालीलैंड के मध्य अनेक दौर की वार्ता हुई जिनका प्रमुख उद्देश्य राजनीतिक और सामाजिक शांति की स्थापना करना था। परन्तु पृथक राज्य की मांग अर्थात् संप्रभुता को लेकर कोई उपयुक्त परिणाम नहीं आया। लन्दन कॉन्फ्रेंस 2012 में सोमालिया और सोमालीलैंड के मध्य पहली वार्ता

अंतरराष्ट्रीय सहयोग से हुई जो कि व्यापक राष्ट्रीय, क्षेत्रीय और अंतरराष्ट्रीय शांति और सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए आयोजित की गई थी। इसके पश्चात दुबइ (2012), अंकारा (2013), इस्तांबुल (जुलाई 2013), इस्तांबुल(जनवरी 2014), जिबूती(दिसंबर 2014, 2020, 2023) में भी सोमालिया और सोमालीलैंड के मध्य चर्चाएं ब्रिटेन, तुर्किए, जिबूती और आईजीएडी जैसे देशों और संगठनों की मध्यस्थता से संपन्न हुई परन्तु कोई भी ठोस परिणाम नहीं आया। संघीय ढाँचे पर मतभेद की बात करें तो सोमालिया संघीय व्यवस्था के अंतर्गत एकीकृत राज्य की वकालत करता है, जबकि सोमालिलैंड स्वयं को एक संप्रभु राज्य मानता है। लुईस के अनुसार, सोमालिलैंड अपनी राजनीतिक पहचान को किसी नई अलगाववादी इकाई के रूप में नहीं, बल्कि पूर्व में स्वतंत्र राज्य के पुनरुद्धार के रूप में देखता है, जो 1960 के पहले के स्वतंत्र शासन के आधार पर अपनी संप्रभुता को कायम करना चाहता है। (लुईस, 2008)17 यह मूलभूत वैचारिक अंतर किसी भी समझौते को जटिल बनाता है।

पूर्वी अफ्रीका में सोमालीलैंड की स्थापना और अलगाववादी आंदोलन, अफ्रीका की राजनीति में संघीय राजनीति व संघीय आत्मनिर्णय–निर्माण, अव्यवस्थित औपनिवेशिक विरासत और विफलतापूर्ण राज्य का प्रत्यक्ष उदाहरण है। सियद बर्रे के सैन्य शासन के अंत के साथ प्रारंभ पृथक सोमालिलैंड का आंदोलन दिन प्रति दिन स्वयं को व्यवस्थित कर रहा है। आज सोमालीलैंड स्वयं को एक राज्य के रूप में स्थापित कर चुका है जिसके पास अपनी जनसंख्या, सरकार, क्षेत्र और मुद्रा आदि है। सोमालिलैंड की सरकार के अनुसार वे एक संप्रभु राज्य भी हैं। हमें सोमालिलैंड में एक स्थिर शासन, लोकतांत्रिक मूल्य और संस्थाएं, स्थिर एवं विकसित और निरंतर प्रगतिशील अर्थव्यवस्था और स्वयं की सुरक्षा के पुख्ता आधार मिलते हैं। जबकि सोमालिया में आज भी राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक आस्थायित्व और गतिशीलता विद्यमान है। सोमालिलैंड ने लोकतंत्र के मूल्यों के अधीन 2001 में संवैधानिक जनमत संग्रह करवाया और 97. 1% से अधिक मतदाताओं ने पृथक सोमालिलैंड की स्थापना अर्थात् स्वतंत्रता को चुना। इस जनमत संग्रह से सोमालीलैंड की आंतरिक वैधता स्पष्ट होती है। प्रस्तुत शोध पत्र का मुख्य तर्क भी यही कहता है कि आत्मनिर्णय के आधार पर सोमालीलैंड स्वयं को अंतर्राष्ट्रीय मान्यता और सहयोग हेतु निरंतर प्रयासरत है परन्तु एक स्वास्थ्य अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था हेतु स्वतंत्र और संप्रभु राज्य सोमालिया की आंतरिक व क्षेत्रीय अखंडता का सम्मान करते हुए सोमालीलैंड को मान्यता नहीं प्रदान कर रहे हैं। जबकि इजरायल ने दिसंबर, 2025 सोमालीलैंड को एक स्वंतत्र और संप्रभु रूप में अंतर्राष्ट्रीय मान्यता प्रदान कर दी है। इजरायल को छोड़ कर आज तक किसी भी अन्य देश, अंतरराष्ट्रीय, राष्ट्रीय, क्षेत्रीय संगठन आदि ने कोई भी औचारिक अंतरराष्ट्रीय मान्यता नहीं प्रदान की। यहां तक कि अफ्रीकी देशों ने भी सोमालिलैंड की अंतरराष्ट्रीय मान्यता के विषय पर चुप्पी साध रखी है। क्योंकि शायद उन्हें भी यह भय हो कि उनके अधिकार क्षेत्र में भी अलगाववादी शक्ति उभर सकती हैं। यह वास्तव में सोमालीलैंड के आत्मनिर्णय के अधिकार बनाम सोमालिया की क्षेत्रीय अखंडता के सिद्धांत के मध्य टकराव है। यहां पर यह बात समझने योग्य है कि आत्म निर्णय का अधिकार आंतरिक शासन और राजनीति को स्थिरता और स्थायित्व तो प्रदान कर सकता है परन्तु क्षेत्रीय अखंडता का सिद्धांत स्थाई शांति और विश्व व्यवस्था में यथास्थिति बनाए रखना चाहता है।

सोमालिया में अलगाववाद का अध्ययन सोमालिलैंड के विशेष संदर्भ में यह भी बताता है कि दुनिया में चल रहे विभिन्न प्रकार के अलगाववादी आंदोलन जो अपने मूल भाग/राज्य से पृथक होकर स्वयं के अस्तित्व को स्थापित करने में लगे हैं वह वास्तव में राज्य पुनर्निर्माण की प्रक्रिया का आह्वान कर रहे हैं। इस प्रक्रिया द्वारा वैसे तो विध्वंस और अशांति का प्रसार होता है परन्तु कभी कभी यह शांति और स्थायित्व का वैकल्पिक व अनुपम उदाहरण भी प्रस्तुत करती है। इससे क्षेत्र विशेष की पृथकता हेतु जो आंदोलित रहते हैं उनकी राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक व सांस्कृतिक पहचान को पुनर्परिभाषित और पुनःस्थापित करने में सहायता होती है।

संदर्भ सूची

1. https://web.mfa.gov.so/country-profile/
2. Zapata M. Somalia: Colonialism to Independence to Dictatorship, 1840-1976. Enough 101, 2012. https://enoughproject.org/blog/somalia-colonialism-independence-dictatorship-1840-1976
3. Zapata M. Somalia: Colonialism to Independence to Dictatorship, 1840-1976. Enough 101, 2012. https://enoughproject.org/blog/somalia-colonialism-independence-dictatorship-1840-1976
4. https://www.govsomaliland.org/article/guide-2021
5. https://www.govsomaliland.org/article/guide-2021
6. https://www.govsomaliland.org/article/guide-2021
7. Constitution of Somalia. Provisional Constitution of Federal Republic of Somalia, 2012. https://constitutionnet.org/vl/item/federal-republic-somalia-provisional-constitution-adopted-august-1-2012-sep-19-2012
8. Constitution of Somalia. Provisional Constitution of Federal Republic of Somalia, 2012. https://constitutionnet.org/vl/item/federal-republic-somalia-provisional-constitution-adopted-august-1-2012-sep-19-2012
9. Lewis IM. A modern history of the Somali: Nation and state in the Horn of Africa (4th ed.). Ohio University Press, 2008.
10. Menkhaus K. Governance without government in Somalia: Spoilers, state building, and the politics of coping. International Security,2007:31(3):74–106. https://doi.org/10.1162/isec.2007.31.3.74
11. Samatar AI. Destruction of state and society in Somalia: Beyond the tribal convention. The Journal of Modern African Studies,1992:30(4):625–641.
12. Menkhaus K. Governance without government in Somalia: Spoilers, state building, and the politics of coping. International Security,2007:31(3):74–106. https://doi.org/10.1162/isec.2007.31.3.74
13. House of Elders, Somaliland. In Wikipedia. Retrieved January 2026, from https://en.wikipedia.org/wiki/House_of_Elders_(Somaliland)
14. Pegg S. International society and the de facto state. Aldershot, UK: Ashgate, 1998.
15. Caspersen N. Unrecognised states? Understanding de facto states and political communities. Polity Press, 2012.
16. African Union Fact Finding Mission Report. Report on Somaliland fact finding mission. African Union, 2005.
17. Lewis IM. Understanding Somalia and Somaliland: Culture, history, society. Columbia University Press, 2008.